શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર हिन्दी

आठ प्रथम वर्ष
अभ्यासक्रम-२ ગામ ____________

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

	मर्यादा
	लोभ
	वीर्य
	मातापिता
	साधारण
	पूर्वद्वार
	कोरे
	मैत्रीभाव
	पडोसी
)	प्राण
)	ओंकार
)	श्रेयांस
3)	निंदक
)	शिव
)	समिति
)	संपूर्ण
)	अग्निकुमार
)	साधु
)	जयणा
)	४ चारित्र

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	जीव
(૨)	प्राणातिपात विरमण
(૩)	इन्द्रियों
(૪)	बाहुबली
(૫)	क्रोध
(૬)	शक्ति
(૭)	मन
(૮)	रामचंद्रजी
(૯)	शोक
(૧૦)	धरणेन्द्र
(૧૧)	श्रुतज्ञान
(૧૨)	बेइन्द्रिय
(૧૩)	मार्गानुसारी
(૧૪)	विघ्न
(૧૫)	संयम
(૫)	वनस्पतिकाय
(૬)	मेरु
(૭)	मांडलिक
(૮)	तप
(૯)	इ इच्छा-खमासमणा
(૧૦)	धना-पत्नीओ
(૧૧)	मस्तकसे
(૧૨)	वीर्य
(૧૩)	ग्वालाओं
(૧૪)	हाँ
(૧૫)	सात
(૧૬)	कंदमूल
(૧૭)	कामना
(૧૮)	श्वासोश्वास
(૧૯)	बिजली
(૨૦)	जीवस्थान

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	प्रमुख
(૨)	पर्याप्त
(૩)	विकलेन्द्रिय
(૪)	नासिका

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	६	(૬)	१०
(૨)	५	(૭)	[illegible]
(૩)	८	(૮)	१
(૪)	७	(૯)	४
(૫)	३	(૧૦)	२

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	१४	१४
(૨)	५	४८
(૩)	४८	१०८
(૪)	१०८	८
(૫)	८	७
(૬)	७	३
(૭)	२	२
(૮)	२	१०
(૯)	१०	११
(૧૦)		२१

પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ✗ | **પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર**

(૧)	✓	(૧)	१८
(૨)	✗	(૨)	२
(૩)	✗	(૩)	१६
(૪)	✓	(૪)	१२
(૫)	✗	(૫)	८
(૬)	✓	(૬)	२३
(૭)	✗	(૭)	४
(૮)	✓	(૮)	१४
(૯)	✗	(૯)	७
(૧૦)	✗	(૧૦)	२१

મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	+ પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	= કુલ ગુણ

માર્ક ____________ તપાસનારની સહી ____________

=

जयणा श्रावक की प्रभु कुलदेवी है। सुंदर जयणा पालन के लिए जीव विचार का ज्ञान अनिवार्य है। यदि जीव विचार जानने के पश्चात भी अपने जीवन में जयणा न आवे तो अपना ज्ञान निष्फल होता है।

जयणापूर्वक चलने से, बैठने से, खडे रहने से, नींद लेने से खाने से तथा बोलने से पाप कर्म का बंध कभी भी होता नहीं है।

इसलिए संसार में कदम कदम पर सावधानी रखकर प्रत्येक क्रिया जयणापूर्वक करने से हम अपनी आत्मा को अशुभ कर्म से दूर रख कर सद्गति से सिद्धगति की ओर प्रयाण करें।

2) बहली देश के तक्षशिला नगरी के उद्यान में प्रभु काउसग्ग ध्यान में रहे। उद्यानपालक ने प्रभु के आगमन का समाचार बाहुबली को दिया। आनंदित होकर बाहुबली ने सोचा मैं सकल सामग्री लेकर सुबह प्रभु को वंदन करने जाऊँगा। सुबह को परिवार, नगरजनों और चतुरंगिणी सेना को लेकर उद्यान में आए। पर परंतु प्रभु तो काउसग्ग पालकर विहारकर गये थे। अतः बाहुबली को अपने प्रमाद के लिये बहुत पश्चाताप हुआ। और उनके पगले के चिन्ह देखकर राजी हो गये। परंतु प्रभुदर्शन न हुए।

प्रभु जहा काउसग्ग ध्यान में खडे थे। वहा बाहुबली ने रत्नमय पीठिका बंधायी और उसपर प्रभु की पादुका प्रतिष्ठित की और धर्मचक्र तीर्थ की स्थापना की।

3) निंदा त्याग हमारी वाणी को शुभ-शुद्ध और पवित्र बनाता है। जब की निंदप्रवृत्तिओं त्याग हमारे जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाता है। जीवन को सुंदर बनाना हो तो जीवन को स्वच्छ बनाना आवश्यक है। स्वच्छ जीवन बनाने के लिए जीवन में प्रविष्ट दुषणों का, निंद्य प्रवृत्तिओं का त्याग करना ही पडेगा।

हमारे जीवन में ऐसा कोई दूषण प्रविष्ट गया हो तो सत्वर दूर करने का पुरुषार्थ करना है।

4) ओम् धार्मिक चिह्न है। जैन दर्शन में इसे पंच परमेष्ठि का सार माना जाता है। संस्कृत में ओम् पांच अक्षर का बना है।

अ + अ + आ + उ + म् = ओम्

प्रथम 'अ' अरिहंत पद का सूचक है।

द्वितिय 'अ' अशरीरी (सिद्ध) पद का सूचक है।

तृतिय 'आ' आचार्य पद का सूचक है।

चतुर्थ 'उ' उपाध्याय पद का सूचक है।

पंचम 'म' मुनि (साधु) पद का सूचक है।

5) जीव जहाँ उत्पन्न होता है वहाँ प्रथम आहार ग्रहण करने का काम करता है। जीव जिस शक्ति के द्वारा आहार योग्य पुद्गलों को ग्रहण करे और उसे रस-खल रूप में परिणमावे वो आहार पर्याप्ति है। शरीर बनाने के काम में उपयोगी हो वह रस और मल-मूत्रादि बने वह खल जानना। यह पर्याप्ति प्रथम समय में ही पूर्ण होती है।